P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-8* April- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वच्छ भारत : अर्थ, प्रयास एवं आवश्यकता

राजेश गुप्ता
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान

सारांश

मन, वाणी, कर्म, शरीर, हृदय, चित्त, समाज, परिवार, संस्कृति और व्यवहार से लेकर धर्म ओर विज्ञान तक में स्वच्छता का विषेष महत्व है । स्वच्छता एक ऐसा विषय है जो वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति का एक आवश्यक तत्व रहा है। प्राचीन षिक्षा पद्धति में यज्ञोपवीत संस्कार के बाद षिष्य को स्वच्छ रहने की षिक्षा दी जाती थी। भारतीय दर्षन में शरीर, आत्मा, मन, बुद्धि तथा पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है। आधुनिक युग में स्वच्छ भारत का स्वप्न महात्मा गांधीजी की देन है। उनका यह कथन महत्वपूर्ण है कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है''। उनके मतानुसार निर्मलता और स्वच्छता दोंनों ही स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवन के अनिवार्य भाग है। इसी कारण महात्मा गांधी (बापूजी) ने अपने साथी नागरिकों को हमेशा स्वच्छ और स्वच्छ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। महात्मा गांधी की स्वच्छता अभियान को एक बार फिर हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''स्वच्छ भारत अभियान'' नाम के तहत राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया। यह सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम है जो राष्ट्रपिता (बापू) के दृष्टिकोण को पूरी तरह से विश्व स्तर पर सफल बनाने के लिए सभी क्षेत्रों से लोगों बुलाते हुए पूरा करने के लिए काम करता है।

मुख्य शब्द : समाज, समस्याएँ, पर्यावरण स्वच्छता, संगठन, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, विद्यालय, पर्यावरण, शौचालय, निस्तारण।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का आधार वे मूल्य हैं जिनमें हमारा जीवन, परिवार और समाज सीधे–सीधे जुड़े हैं। इस मूल्यों में पवित्रता और स्वच्छता भी है। ये ऐसे मूल्य है जिससे हमारा जीवन उत्तरोत्तर आगे ही नहीं बढ़ता जाता बल्कि परिवार और समाज एक आदर्श परिवार और एक आदर्श समाज की और निरन्तर उन्मुख होते जाते हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां स्वच्छता की आवश्यकता न हो, यहां तक कि स्वच्छता से ही व्यक्ति, परिवार और समाज की पहचान की जाती है। उसकी समृद्धि, प्रगति और विकास का रास्ता भी स्वच्छता से ही होकर गुजरता है। स्वच्छता मानव की एक आदर्श जीवन शैली है, जिसे भारत में अभी दृढता के साथ स्थापित करने की आवश्यकता है।

स्वच्छता क्या है? इसको अनेक विद्वानों एवं संस्थाओं ने अपने–अपने तरीके से समझाने का प्रयास किया है। मुख्य रूप से 'स्वच्छ' शब्द का अर्थ है– अत्यन्त साफ, विशुद्ध, उज्जवल एवं स्वस्थ। स्वच्छ शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक 'स्वच्छता' बनता है। स्वच्छता का तात्पर्य है –सब प्रकार से साफ–सफाई, निर्मलता एवं पवित्रता। मन–हृदय की, शरीर एवं वस्त्रों की, घर–बाहर, पानी –वायु–भूमि आदि की निर्मलता या सफाई रखना ही स्वच्छता है। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य, अच्छे संस्कार एवं सुसभ्यता की निशानी है। इससे मानव के उत्तम आचार–विचार का पता चलता है। गन्दगी न रखना या गन्दगी से घृणा रखकर उसे दूर करना ही स्वच्छता है। विष्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने स्वच्छता को कई प्रकार से परिभाषित किया है।

1. लोगों को स्वच्छता के लिए शौचालयों व दूषित पानी को स्वयं स्वच्छ रखने के साधनों व उपायों को करने की आवश्यकता ही स्वच्छता है।
2. मानव के मल–मूत्र, कचरे आदि का सुरक्षित संग्रहण, भण्डारण, उपचार निस्तारण तथा पुनः प्रयोग करना स्वच्छता है।
3. तूफान के पानी की निकासी व्यवस्था, औद्यौगिक कचरा, खतरनाक कचरा जैसे रासायनिक कचरा, रेडियोएक्टिव कचरा और अस्पतालों का कचरा आदि का संग्रहण व निस्तारण करना ही स्वच्छता है।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोश (यूनीसेफ) तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन की भाषा में व्यक्ति का प्रत्येक स्थान पर एक अच्छे और स्वच्छ शौचालय तक पहुँच का अधिकार होना ही बुनियादी स्वच्छता का एक सर्व स्वीकार्य मानक है।

बुनियादी स्वच्छता का प्रश्न व्यक्ति, विशेष रूप से लड़कियों, किशोरियों, महिलाओं की निजता एवं सम्मान की रक्षा से जुड़ा हुआ तो है ही, व्यापक रूप से इसका सम्बन्ध जल–मल जनित बीमारियों से होने वाली असमय मौतों को रोकने, कार्यस्थल पर स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था से, सकल घरेलू उत्पाद के परिणाम में वृद्धि कर दिए जाने से है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्पोषणीय विकास लक्ष्यों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व वर्ष 2030 तक 'स्वच्छ' तरीके से प्रबन्धित 'सबके लिए स्वच्छता' तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्वच्छ भारत हेतु महात्मा गाँधीजी द्वारा प्रस्तुत विचारों एवं कार्यक्रमों की उपादेयता से अवगत कराना
2. स्वच्छ भारत हेतु प्रयास एवं लक्ष्यों की समीक्षा करना।
3. स्वच्छ भारत अभियान में बेहतर कियान्विति हेतु चरणबद्ध योजना एवं उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
4. विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रमों के बावजूद ग्रामीण स्तर पर स्वच्छता के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता न मिलने के कारणों की समीक्षा करना।
5. भविष्यकालीन चुनौतियों के संदर्भ में स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत के लक्ष्य हेतु वर्तमान में किये जा रहे प्रयासों का विश्लेषण कर नीति निर्माताओं एवं शोधार्थियों के लिए रूपरेखा प्रस्तुत करना।

साहित्यावलोकन

स्वच्छ भारत अर्थ प्रयास एवं आवश्यकता के संदर्भ में किए गए इस शोध के उद्देश्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है यथा

पंकज के सिंह द्वारा लिखित पुस्तक स्वच्छ भारत समृद्ध भारत (2017), में स्वच्छता को मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्व का विषय स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि किसी भी देश के बेहतर और विकसित देश होने के पीछे वहां के निवासियों में स्वच्छता के प्रति अनुशासित और सक्रिय बने रहने की भावना होना आवश्यक है। अधिकांश विकसित देशों में छोटी आयु से ही बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरुक किया जाता है जो हमारे देश में तुलनात्मक रूप से कम है। स्वच्छ भारत अभियान इस दिशा में निश्चित रूप से और बेहतर रूप में कार्य कर सकता है।

प्रधानमंत्री कार्यालय भारत सरकार ने भी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए गए स्वच्छ भारत अभियान द्वारा लोगों में आए बदलाव को अपनी पत्रिका स्वच्छ भारत ए सक्सेस स्टोरी (2017), के माध्यम से रेखांकित किया है।

मृदुला सिन्हा और आर. के. सिन्हा ने भी अपनी पुस्तक स्वच्छ भारत ए क्लीन इंडिया (2016), में स्वच्छता की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए यह बताया है कि स्वच्छ भारत अभियान इस दिशा में एक बहुत बड़ा माध्यम हो सकता है।

किरण बेदी और पवन चौधरी द्वारा लिखित पुस्तक स्वच्छ भारत चेक लिस्ट (2015), के अंतर्गत स्वच्छता को प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बताते हुए यह बताया गया है कि प्रत्येक नागरिक अपने द्वारा स्वच्छता के क्षेत्र में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाकर स्वच्छ भारत अभियान में अपना अमूल्य योगदान दे सकता है।

श्रीराम वर्मा ने अपनी पुस्तक भारतीय राजनीतिक विचारक में यह बताया है कि कि गांधीजी स्थानीय स्वशासन के समर्थक थे। गांधीजी ने जो पंचायती राज की जो संकल्पना प्रस्तुत की है उसके अंतर्गत उन्होंने स्वच्छता और निर्मलता को महत्वपूर्ण आधार माना है।

मधुकर श्याम चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक भारतीय राजनीतिक विचारक में स्वच्छता को गांधी दर्शन का महत्वपूर्ण आधार स्वीकार किया गया है। इसमें बताया गया है कि गांधी जी ने अपने समाचार पत्रों और पुस्तकों के माध्यम से स्वच्छता का संदेश हर भारतीय नागरिक को देने का प्रयास किया।

स्वच्छता के बुनियादी सिद्धान्त

सबसे लिए स्वच्छता : अधिकार को एक वास्तविकता बनाना

जुलाई 2010 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने स्वच्छता तक पहुंच को एक अनिवार्य मानवाधिकार के रूप में स्वीकार किया तथा खुले में शौच जाने को समाप्त करने का आह्वान किया। इसका अर्थ यह है कि अब स्वच्छता तक पहुंच को एक विलासिता न समझ कर एक अधिकर समझा जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति, नीति निर्धारक, क्रियान्वयन पागधारी, राजनीतिक एवं प्रशासनिक नेतृत्व को यह समझ लेना चाहिए किस्वच्छता तक पहुंच एक मौलिक अधिकार है।

स्वच्छता एक लाभकारी निवेश

इसमें किसी को सन्देह नहीं करना चाहिए कि स्वच्छता एवं स्वच्छ वातावरण आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त एवं व्यवहार्य है। अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि स्वच्छ शौचालयों की संख्या तथा वृद्धिकारी सकल घरेलू उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष धनात्मक सहसम्बन्ध है। स्वच्छ शौचालय चिकित्सा की लागत को कम करते है, शिक्षा पर निवेश को बढ़ाते हैं तथा जल स्रोतों को दूषित होने से बचाकर पेयजल की गुणवत्ता में वृद्धि लाते हैं।

स्वच्छता मान–मर्यादा, समानता एवं सुरक्षा लाती है

यदि प्रत्येक घर में स्वच्छ शौचालय की सुविधा उपलब्ध हो जाती है,तो वैयक्तिक एवं जनस्वास्थ्य में सुधार होगा, महिलाओं/लड़कियों की निजता व मानमर्यादा की रक्षा होगी, शिक्षा के उच्च स्तर प्राप्त किए जा सकेंगे, महिलाओं के साथ छेड़खानी व बलात्कार की घटनाओं में कमी आएगी उत्पादकता एवं सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य हेतु अति महत्त्वपूर्ण है

समुन्नत स्वच्छ आदतें मृत्यु दरों में कमी लाती हैं, सीखने एवं याद रखने में सुधार लाती हैं, बच्चों के बौनेपन को रोकती है। 5 साल तक के बच्चों में अतिसार दूसरी सबसे बड़ी जानलेवा बीमारी है, जो मुख्य रूप से अस्वच्छ वातावरण की देन है, इसके साथ–साथ निमोनिया, हैजा, पेचिस, पेट के कीड़े, आँखों के रोग अस्वच्छ वातावरण की देन हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-8* April- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वच्छता साफ पर्यावरण को सम्पोषणीय बनाती है

खुले में शौच को जाना समाप्त करना मानव स्वास्थ्य प्रोन्नयन एवं पर्यावरण संरक्षण दोनों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मानव मल जल, वायु एवं मिट्‌टी को प्रदूषित करके मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न करता है। यदि मानव मल का निस्तारण स्वच्छ तरीके से कर दिया जाए, तो इससे न केवल मानव स्वास्थ्य एवं उसकी उत्पादकता के सुधार होगा, वरन् पर्यावरण को संरक्षित करने में भी सहायता मिलगी।

विष्व के विकसित देशों में विकास और आधुनिकता के जो मानक तय किये गये हैं उनमें स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। हम उन विकसित देशों के मॉडल को अपना कर आगे बढने की बात तो करते हैं, लेकिन क्या उन मानकों को भी विकास और आधुनिकता में सम्मिलत करने के लिए तैयार हैं, इस पर विचार करने की आवश्यकता हैं। स्वच्छता का दायरा इतना विस्तृत है कि इसे अमल में लाने के लिए कई स्तरों पर विचार करने की आवश्यकता है।

स्वच्छता हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ की पहलें

संयुक्त राष्ट्र संघ की और से वातावरण को स्वच्छ एवं स्वच्छ बनाने के लिए समय–समय पर निम्नलिखित पहलें की गई हैं–

खुले में शौच समाप्त करो अभियान

संयुक्त राष्ट्र के उपमहासचिव जैन एलियासन द्वारा 28 मई, 2014 को खुले में शौच समाप्त करो अभियान का प्रारम्भ किया गया। इस अभियान का उद्देश्य बुनियादी स्वच्छता से वंचित 2.5 अरब लोगों तक स्वच्छ शौचालय की पहुंच सुनिश्चित करना।

विश्व शौचालय दिवस

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 19 नवम्बर को विश्व शौचालय दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव स्वीकार किया। 2001 में लगातार 19 नवम्बर को विश्व शौचालय दिवस के रूप में मनाया जाता है, ताकि स्वच्छता अभियान की प्रति प्रतिबद्धता को बनाए रखा जा सके।

सम्पोषणीय स्वच्छता : 2015 तक के लिए पंचवर्षीय अभियान

खुले में शौच जाने को समाप्त करने की और लक्षित यह अभियान एक जागरूकता अभियान है, जो सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों में से एक प्रमुख लक्ष्य–स्वच्छता तक सार्वभौमिक पहुंच को प्राप्त करने पर केन्द्रित है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष– 2008

संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा द्वारा 2008 को अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष के रूप में मनाए जाने का संकल्प पारित किया। इसके अन्तर्गत विश्व के अनेक देशों में स्वच्छता के प्रोन्नयन हेतु कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए।

भारत में स्वच्छता हेतु पहले

स्वच्छता एक ऐसा विषय है जो वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति का एक आवश्यक तत्व रहा है। लेकिन आधुनिक युग में स्वच्छ भारत का स्वप्न महात्मा गांधीजी की देन है। उनका यह कथन महत्वपूर्ण है कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है''। उनके मतानुसार निर्मलता और स्वच्छता दोंनों ही स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवन के अनिवार्य भाग है। उन्होंने स्वच्छता एवं साफ–सफाई को गांधीवादी जीवन पद्धति का अभिन्न अंग बताया था। सभी के लिए सम्पूर्ण स्वच्छता उनका सपना था। पंचायतों के कार्यां से सम्बन्धित 11वीं अनुसूची बनाई गयी जिसमें 29 विषय है। यथार्थ में इन सभी 29 विषयों का मूल आधार सफाई एवं स्वच्छता ही है।

गांधीजी ने खुद कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। यदि गांधीजी के जीवन का अध्ययन करें और रोजमर्रा के क्रियाकलापों पर नजर डाले तो पता चलेगा कि वे जीवन में वे छोटी–छोटी बातों पर कितना ध्यान देते थे। इन बातों में सफाई और स्वच्छता भी उनके दैनिक कार्यों का हिस्सा थी। रचनात्मक कार्यक्रम के तहत उन्होंने पूरे देशभर में भ्रमण किया, अंग्रेजों के खिलाफ बड़े संघर्ष के लए लोगों को तैयार करने के अलावा वो साफ–सफाई तथा स्वच्छता के महत्व के बारे में भी लोगों को भाषण देते थे। गांधीजी ने हमेशा साफ–सफाई और स्वास्थ्य विज्ञान के बारे में ग्रामीणों को शिक्षित करने की जरूरत पर जोर दिया। गांधीजी हमेशा अपनी पत्रिका हरिजन में स्वच्छता के महत्व को लिखते थे। इसलिए हमारे राष्ट्रपिता न सिर्फ अंग्रेजों की दासता के खिलाफ लड़े बल्कि स्वास्थ्य और साफ–सफाई को लेकर लोगों के गलत कार्यप्रणाली के खिलाफ भी लड़े। उन्होंने पूरे जीवन भर लोगों को खुद के और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्वच्छ भारत मिशन

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान स्वच्छ भारत अभियान का सपना महात्मा गॉधी द्वारा देखा गया था। महात्मा गांधी (बापूजी) ने अपने साथी नागरिकों को हमेशा स्वच्छ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है''। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। गांधी जी के इन विचारों से प्रेरित होकर स्वतंत्रता के पश्चात् ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों को स्वच्छ बनाए रखने के लिए समय–समय पर अनेक पहलें की गई हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं–

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान

संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा द्वारा 1980 के दशक को विश्व जल दिवस के रूप में घोषित किए जाने पर केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करने के लिए सन् 1986 में केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। वस्तुतः यह पूर्तिजनित उच्च सब्सिडी एवं अधोरचना अभिमुखी कार्यक्रम था। बाद में इसकी यही विशेषताएं इसकी कमजोरियां सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त न्यून वित्तीय आवंटन के चलते इस कार्यक्रम को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। इसी के समानान्तर कतिपय राज्यों में समुदाय से संचालित स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाए जिन्हें अपेक्षाकृत अच्छी सफलता मिली।

निर्मल भारत अभियान

केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम की असफलताओं तथा स्वच्छता जागरूकता अभियानों की

सफलताओं से सीख लेते हुए सन् 1999 में सम्पर्ण स्वच्छता अभियान प्रारम्भ किया गया। इस अभियान में सन् 2012 तक सार्वभौमिक घरेलू स्वच्छता का लक्ष्य स्थापित किया गया। 1अप्रेल, 2012 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा इस कार्यक्रम को निर्मल भारत अभियान (एनबीए) नाम दिया गया। यह अभियान 'समुदाय संचालित' एवं 'जनकेन्द्रिय' तथा माँगजनित उपागम पर आधारित था। इस स्थिति को हासिल करने वाले गांवों को निर्मल ग्राम पुरस्कार नामक कार्यक्रम के तहत मौद्रिक पुरस्कार और उच्च प्रचार प्राप्त हुआ।

स्वच्छ भारत अभियान

निर्मल भारत अभियान जैसे कई जागरूकता कार्यक्रमों को निजी स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वच्छता के लिए शुरू किया गया था जिससे भारत में फैली हर प्रकार की गंदगी को दूर किया जा सके और गांधीजी के सपने को साकार किया जा सके। भारत के नागरिकों के अपेक्षित सहयोग न मिलने के कारण, ये सभी ड्राइव एक मजबूत प्रभाव बनाने में विफल रहे। भारतीयों ने एक अस्वस्थ और गंदे जीवनशैली का नेतृत्व करना जारी रखा। वास्तव में भारत को स्वच्छ बनाने के लिए केवल गांधी के चश्मे के ढांचे से काम चलने वाला नहीं है। इसके लिये गांधी की सोच पर सम्पूर्णता से विचार किये जाने एवं उसको क्रियान्वित करने की जरूरत है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एवंगांधीजी के सपने को वास्तविक रूप से साकार करने के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान को एक बार फिर हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 24 सितम्बर 2014 को केन्द्रीय मंत्रीमण्डल की मंजूरी से 'निर्मल भारत अभियान' को स्वच्छ भारत अभियान के रूप में पुनर्गठित किया एव ''स्वच्छ भारत अभियान'' नाम के तहत राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर 2014 को दोबारा शुरू किया।

यह कार्यक्रम अगले पांच वर्षों में 2 अक्टूबर, 2019 तक पूरा किया जाना है। इस स्वच्छ भारत अभियान को ''एक कदम स्वच्छता की ओर'' नारा दिया गया है। स्वच्छ भारत अभियान को क्लीन इंडिया मिशन (ब्समंद प्दकपं डपेपवद) या क्लीन इंडिया ड्राइव भी कहा जाता है। स्वच्छ भारत अभियान भारत में सबसे बड़ी स्वच्छता अभियान माना जाता है। यह सरकार द्वारा संचालित एक कार्यक्रम है जो राष्ट्र के पिता (बापू) के दृष्टिकोण को पूरी तरह से विश्व स्तर पर सफल बनाने के लिए लिए काम करता है।

इसके लिए भारत सरकार ने महात्मा गांधी के जन्म की 150वी वर्षगांठ (2 अक्टूबर 2019) तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रूपये की अनुमानित लागत के 1.2 करोड शौचालयों का निर्माण करके भारत को खुले में शौच मुक्त करने का लक्ष्य रखा है। यह शहरी व ग्रामीण लोगों के लिए मांग आधारित जन केन्द्रित अभियान है जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी आदतों को ओर बेहतर बनाया जा सके, स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधाओं की मांग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना, जिससे आम लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, पीने का साफ पानी हर घर तक पहुंचाना, सड़कों की सफाई करना और देश का नेतृत्व करने के लिए देश के बुनियादी ढांचे को बदलना सड़कों और फुटपाथों की सफाई, अनाधिकृत क्षेत्रों से अतिक्रमण हटाना शामिल है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती हैं। इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है।

दिल्ली में राजपथ पर स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक शुरूआत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों से महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने का आह्वान करते हुए भारत माता के दो महान सपूतों महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उन्होंने याद दिलाया कि कैसे श्री शास्त्री द्वारा ''जय जवान, जय किसान'' का नारा दिए जाने के बाद किसानों ने कड़ी मेहनत की और देश को खाद्य सुरक्षा के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। प्रधानमंत्री मोदी का कहना है कि राष्ट्रपिता ने क्विट इंडिया और क्लीन इंडिया का नारा दिया था लेकिन अभी भी बापू का क्लीन इंडिया का सपना अधूरा है। मोदीजी का मानना है कि यदि हम इस अभियान को पूरा कर दिखाते हैं तो ये हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के लिए बहुत बड़ी श्रद्धांजलि होगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जिस प्रकार भारतीय लोगों ने एकजुट होकर भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराया था उसी प्रकार अब भी हमें एक होने की सख्त जरूरत है और यदि इस अभियान के लिए प्रतिवर्ष देश का हर नागरिक अपने कीमती समय में 100 घंटे भी सफाई के लिए निकालता है तो वो दिन दूर नहीं जब हमारा भारत स्वच्छ और खुशहाल बन जाएगा। उन्होंने एक मंत्र दिया की हम "न गन्दगी खुद करेंगे और न दूसरों को करने देंगे"।

प्रधानमंत्री ने देश की सभी पिछली सरकारों और सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सफाई को लेकर किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है। यह काम तो देश के 125 करोड़ लोगों द्वारा किया जाना है जो भारत माता के पुत्र–पुत्रियां हैं। उन्होंने ये भी निवेदन किया कि हर भारतीय को इस अभियान को एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए और इस अभियान को सफल बनाने में अपनी तरफ से पूरी कोशिश करे।

सरकार के प्रयास

2 अक्टूबर 2014 को जबप्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यह अभियान शुरू किया तब उनके साथ कई राजनेता, उद्योगपति, बॉलीवुड कलाकार सहित पूरे देश में विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षक, छात्र और सरकारी कर्मचारी स्वेच्छा से इस 'स्वच्छ भारत अभियान' में शामिल हुए। इसे जनआंदोलन बनाने के लिए, स्वच्छ भारत अभियान में योगदान देने और सोशल मीडिया पर इसे साझा करने के लिए उन्होंने नौ हस्तियों को आमंत्रित किया है, जिनमें मृदुला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामेदव, शशि थरूर, अनिल अंबानी, कमल हसन, सलमान

खान, प्रियंका चोपड़ा और टेलिविजन कार्यक्रम तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टीम शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इन कार्यों को अंजाम देने के लिए नौ अन्य लोगों को आमंत्रित किया गया है और इस तरह एक श्रृंखला–सी बना दी गई है।इस प्रकार इससे लोग जुड़ते जाएंगे। प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों को स्वच्छता से स्वास्थ्य की अहमियत को समझाते हुए हर देशवासी से इसे अपनाने की अपील की थी। उनके इस कदम से स्वच्छता जैसा उपेक्षित विषय अचानक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आ गया।

इस मुहिम में राज्यों ने भी भाग लिया है और कई अन्य कार्यक्रम और योजनाएं इस अभियान को सफल बनाने के लिए तैयार की जा रही हैं। हर साल सरकार देश भर से साफ शहरों की सूची जारी की जा रही है ताकि सभी शहरों में खुद को अधिक से अधिक स्वच्छ एवं बेहतर बनाने हेतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हो सके। अधिकांश राज्यों ने राज्य या सरकारी कार्यालयों में तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। बहुत से स्कूलों और कॉलेजों ने इस अभियान में दिलचस्पी दिखाई है और वे इसे प्रभावी रूप से लागू कर रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए इस अभियान के तहत् स्वच्छ पखवाड़ा मनाने के साथ, प्रत्येक केन्द्रीय मंत्रायल मंत्रालय ने एक स्वच्छता एक्शन प्लान बनाया है।

सरकार घरों में शौचालय बनाने के लिए लोगों को सबसिडी दे रही है। व्यवहार में बदलाव और उपयुक्त तकनीकों के इस्तेमाल से आगे जरूरी है कि स्वच्छता सबका दायित्व बने। इसके लिए निजी क्षेत्र भी स्वच्छता अभियान में तेजी से शामिल हो रहे हैं। इसका एक उदाहरण टाटा समूह के प्रयास हैं। इसने भारत के प्रत्येक जिले में नियुक्त 600 युवाओं को प्रशिक्षण और आर्थिक मदद दी है, जिससे कि स्वच्छ भारत मिशन को लागू करने वाले कलेक्टरों को सहयोग किया जा सके।

स्वच्छ भारत मिशन के क्रियान्वयन में काफी गति आयी है और महत्त्वपूर्ण सफलताएं भी मिली हैं। 2 अक्टूबर, 2014 को इस कार्यक्रम की शुरूआत से अब तक ग्रामीण स्वच्छता भारत में सफाई व्यवस्था 42 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत तक पहुंच चुकी हैं। ग्रामीण भारत में खुले में शौच करने वाले लोगों की संख्या 55 करोड़ से घटकर 35 करोड़ तक हो गयी है।भारत में अक्टूबर 2014 एवं नवम्बर 2017 के बीच घरों में 52 मिलियन शौचालय बनवाए गए है। पिछले 4 वर्षों में देश के पिछड़े इलाकों के कई गांव खुले में होने वाले शौच से बिल्कुल ही मुक्त हो गए हैं। जब माननीय प्रधानमंत्री ने पहली बार लाल किले की प्राचीर में इस अभियान की शुरूआत की थी, तब से अब तक यह धीरे–धीरे एक जन–आंदोलन का रूप ले चुका है।

स्वच्छता के मामले में आज गांव, नगर, शहर और कस्बे सभी स्थान पर 'स्वच्छ भारत मिशन' का अभियान पहुंच रहा है। इससे आम और खास दोनों तरह के लोगों में 'स्वच्छता का विचार' पनप रहा है। और इस अभियान के कारण देशभर के बहुत सारे क्षेत्रों में साफ–सफाई के प्रति जागरूकता फैली है। लेकिन इस अभियान की पूर्ण सफलता हेतु हमें इस पर चिंतन करने तथा और कदम उठाने की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ढांचागत सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ–साथ लोगों की सोच में बदलाव लाना बेहद जरूरी है। गांवों में लोग शौचालय होते हुए भी खुले में शौच करना पसंद करते हैं। ग्रामीणों को शौचालय के इस्तेमाल के फायदों को बताकर ही उनका व्यवहार बदला जा सकता है।

निष्कर्ष

स्वच्छता किसी पर थोपा जाने वाला कार्य नहीं है जो किसी पर दबाव डालकर कराया जाए। अच्छी सेहत के लिए हर प्रकार की स्वच्छता जरूरी है। इसीलिए स्वच्छता के पूर्व हर एक को इसके महत्व के बारे में पता होना चाहिए। भारत के क्रमिक विकास के लिए स्वच्छ भारत मिशन बहुत ही जरूरी है जब तक कि लक्ष्य न जाए। भारत में लोगों के लिए वास्तव में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक कल्याण की भावना को प्राप्त करना बहुत जरूरी है। यह वास्तविक मायने में भारत की स्थिति की अग्रिम बनाने के लिए है।

स्वच्छ भारत मिशन का एक अहम तत्व नतीजों का प्रमाणीकरण भी है। यह इस कार्यक्रम की विश्वसनीयता के लिए बहुत जरूरी है। वर्तमान में जिला–स्तर, राज्य–स्तर और राष्ट्रीय स्तर की तृतीय पक्ष सत्यापन के साथ एक बहुस्तरीय प्रक्रिया चल रही है। इस प्रयासों को और मजबूत बनाए जाने की जरूरत है और आने वाले दिनों में मुख्यधारा में शामिल करने की जरूरत है। स्वच्छता अभियान मिशन को सहभागिता के द्वारा आगे बढ़ाना आज भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि स्वच्छता देश के प्रत्येक व्यक्ति की आदत बन जाए तो देश की कायापलट ही हो जाएगी क्योंकि अस्वच्छता के कारण की आज देश भ्रष्टाचार, अनाचार, स्वार्थ, हिंसा, अधर्म और पापाचार की ओर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में देश के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी स्वच्छ रहने और दूसरों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना देशभक्ति का ही कार्य है।

जैसा कि हम सभी ने सबसे प्रसिद्ध कहावत के बारे में सुना है कि ''स्वच्छता के आगे बुलंदी है''। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज को अपने नागरिकों को जीवन के हर कदम में स्वच्छ और स्वस्थ होने की आवश्यकता है। जब देश की आम जनता भी इस अभियान में सहयोग देने लगेगी तो इस अभियान को सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। स्वच्छ भारत अभियान एक बड़ी ही कारगर योजना साबित होगी जिसके जरिये लोग स्वच्छता के महत्व को अच्छी तरह से समझ पाएंगे जिसके साथ ही भारत एक सुन्दर और स्वच्छ देश बन जाएगा। यदि देश के नागरिक इस अभियान को एक जिम्मेदारी के रूप में लेते हैं तो इस अभियान को पूरा होने में कोई रोक नहीं सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *रिसर्च जनरल ऑफ सोषल एण्ड लाइफ साइन्सेस, रीवा, अंक–13, वर्ष 07, दिसम्बर, 2012 पृ. 324*

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-8* April- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

2. शर्मा, विरेन्द्र प्रकाष 'भारत में समाज, रिपोर्ट ऑफ बर्ल्ड हेल्फ ऑर्गनाइजेशन, पंचषील प्रकाषन, जयपुर, 2015, पृ. 330
3. बेन्नी जॉर्जरू, निर्मल ग्राम पुरस्कार : ग्रामीण भारत में प्रोत्साहन योजना में एक अनूठी प्रयोग ग्रामीण अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका (आईजेआरएस) वॉल्यूम 16 नंबर, पृ.सं. 36 1अप्रैल 2009
4. मृदुला सिन्हा एवं सिन्हा, आर. के., स्वच्छ भारत ए क्लीन इंडिया : प्रभात प्रकाशन, पृ.सं. 24, 6 मई 2016.
5. ''स्वच्छ भारत चेक लिस्ट'' किरण बेदी व पवन चौधरी विस्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पृ.सं. 18, 1 जनवरी 2015
6. जोशीएस. सी.,स्वच्छ भारत मिशन एन एसएसमेंट : 1 जनवरी 2017 पृ.सं. 102
7. यंग इण्डिया, 22 जनवरी, 1930
8. कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मका गाँधी, खण्ड – 66, पृ.सं. 426
9. हरिजन, 12 अप्रेल, 1942
10. वर्मा, श्रीराम, भारतीय राजनीतिक विचारक : कॉल्ज बुक हाऊस, जयपुर पं.सं. 430, 1998.
11. चतुर्वेदी, मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक : कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, पृ.सं. 301
12. नगर, पुरूषोत्तम 1999 आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 430
13. स्वच्छ भारत अभियान,एम. के. सिंह सोलर बुक्स 1 जनवरी 2017 पृ. सं. 78.
14. सिंह पंकज के., स्वच्छ भारत समृद्ध भारत डायमंड बुक्स 1 अक्टूबर 2015
15. भारत में स्वच्छ अभियान – कार्य नीति और क्रियान्वयन नेशनल बुक ट्रस्ट 1 जनवरी 2016

पत्र–पत्रिकाएं

1. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार 8 नवंबर 2014 : 27 नवंबर 2014
2. स्वच्छ भारत सक्सेस स्टोरीज, भारत सरकार 18 अगस्त 2017
3. ''पी.एम इंडिया'' प्रधानमंत्री कार्यालय, 8 नवंबर 2014 : 27 नवंबर 2016
4. स्वच्छ भारत – स्वच्छ विद्यालय अभियान
5. पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार स्वछ्ता प्रतिवदेन 2015–16
6. पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार स्वछ्ता प्रतिवदेन 2016–17
7. स्वच्छ भारत स्वस्थ अलवर म्हारो स्वच्छ अलवर वर्ष 1 अंक 4 दिनांक 15 नवंबर 2017.
8. स्वच्छ भारत स्वस्थ अलवर म्हारो स्वच्छ अलवर वर्ष 1 अंक 3 दिनांक 15 सितंबर 2015.
9. स्वच्छ भारत स्वस्थ अलवर म्हारो स्वच्छ अलवर वर्ष 1 अंक 1 दिनांक 10 जुलाई 2017.
10. जिला स्वच्छता मिशन, जिला परिषद अलवर
11. कुरूक्षेत्र, वर्ष 62, अंक 08 जून, 2016
12. कुरूक्षेत्र, वर्ष 62, अंक 02 फरवरी, 2018
13. योजना, वर्ष 61, अंक 05 मई, 2017
14. प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी, 2017
15. दैनिक भास्कर, 03 फरवीर, 2018
16. दैनिक भास्कर, 09 फरवरी, 2018
17. राजस्थान पत्रिका, 07 फरवरी, 2018
18. राजस्थान पत्रिका, 03 फरवरी, 2018
19. स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण जिला अलवर, पत्रिका सत्र 2017–18